

Cotton University

Guwahati

**DEPARTMENT OF HINDI**

एम. ए. ( प्रोग्राम ) पाठ्यक्रम

चयन - आधारित क्रेडिट पद्धति

( LOCF )

 ( Credits)

प्रश्न-पत्रों का विभाजन/क्रेडिट (L+T+P Format)

 Part-I

**भाग-I**

1.1 प्रस्तावना

**साहित्य हमारे सामने यथार्थ का चित्र भी पेश करता है। साहित्य की विषयवस्तु में विचार ही नहीं होते; विचारों की भूमि- मनुष्य का कर्ममय जीवन भी होता है। दर्शन और विज्ञान की सहायता से हम यथार्थ को समझना चाहते हैं; साहित्य की सहायता से हम यथार्थ को समझना ही नहीं चाहते हैं, उसे देखना भी चाहते हैं।**

**(रामविलास शर्मा,** 1955**)**

साहित्य शब्द की उत्पत्ति ‘सहित’ **शब्द हुई है।** साहित्य मनुष्य के विचार-जगत और भाव-जगत को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है। मनुष्य जीवन की विविधता का अंकन साहित्य का उपजीव्य है। हर्ष, विषाद, क्रोध, घृणा जैसे मनुष्य संवेदन साहित्य की आधार-भूमि है। साहित्य अनुशासन ‘कला’ की श्रेणी में आता है। इस तरह मनुष्य जीवन की संवेदनाओं की अभिव्यक्ति जिन साहित्य रूपों के जरिए होती है, उनकी विशिष्टता का आधार अभिव्यक्ति की कलात्मकता होती है। अभिव्यक्ति की कलात्मकता अंततः सौंदर्य की सर्वमान्य श्रेणियों के प्रतिमानों के आधार पर मूल्यांकित होती है। यही कारण है शास्वत यह प्रश्न बना रहता है कि सौंदर्य की श्रेणियाँ सर्वकालिक हैं या कालाधीन। बहुश्रुत है कि आदि काव्य के सृजन की प्रेरणा वाल्मीक को क्रोच पक्षी के रूदन से मिली। इस तरह मनुष्य जाति का दुःख-दर्द साहित्य की प्रेरणा का स्रोत है या मनुष्य का हर्ष साहित्य की मूल प्रेरणा है, निर्णय कठिन है। साहित्य के अनुशासन में इन्हीं सैद्धांतिक प्रश्नों पर अधिक व्यवस्थित रूप में विचार किया जाता है।

बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप साहित्यिक मान्यताओं में भी लगातार परिवर्तन दिखाई देता है, लेकिन मूल प्रश्नों का सैद्धांतिक कलेवर नहीं बदलता है। इसके साथ साहित्य अनुशासन को लगातार परिवर्तनशील सृजनात्मक जगत से स्वयं को जोड़े रखने की अनिवार्यता होती है क्योंकि नई साहित्यिक कृतियाँ लगातार नए मानकों को जन्म देती हैं।

इस तरह से साहित्य का अध्ययन मनुष्य के संवेदनात्मक जगत का विस्तार ही नहीं करता है, बल्कि कला और सौंदर्य जगत से मनुष्य का आत्मीय संबंध भी स्थापित करता है। साहित्य और भाषा के अंतर्संबंध मनुष्य को आलोचनात्मक, रचनात्मक और ज्ञानात्मक संवेदन बढ़ाने में भी मदद करते हैं। इसी के साथ यह अनिवार्य हो जाता है कि छात्र दूसरे साहित्येतर अनुशासनों जैसे समाज विज्ञान, मानविकी से साहित्य के अंतर को ठीक तरह से समझ पाए। इन दूसरे अनुशासनों का ज्ञान विद्यार्थी को विवेकशील, संवेदनशील और सृजनशील बनाने के साथ उनमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। वैश्विकता और बंधुत्व के भाव को आत्मसात करना आज हर एक व्यक्ति के लिए आवश्यक है; इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्यिक ज्ञान के साथ विद्यार्थी को अच्छा नागरिक बनाने और उनमें एक स्वस्थ समाज के निर्माण की क्षमता को विकसित करना है। यह पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी साहित्य, भाषा, आलोचना और काव्यशास्त्र का अध्ययन छात्रों की सैद्धांतिक समझदारी को पुख्ता करता है, वहीं कविता, नाटक, कहानी, निबंध आदि का अध्ययन उन सिद्धांतों की व्यावहारिकता को समझने में मदद करता हैं।

**1.2 पाठ्यक्रम योजना और विकास हेतु अधिगम आधारित दृष्टिकोण**

भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है । हिन्दी पढ़ने वाले छात्र को भाषा की क्षमता से परिचित होना जितना आवश्यक है, उतना ही दरपेश सामाजिक समस्याओं को समझने की क्षमता होनी भी जरूरी आज हम भूमंडलीकृत समाज के अंग हैं, अंतः हर एक तरह के पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को देश - विदेश के साहित्य में हो रहे बदलाव से परिचित कराना भी हो जाता है। पाठ्यक्रम के जरिए व्यावसायिक योग्यता उत्पन्न करके बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण की वैश्विक गति के बीच हिंदी की राष्ट्रीय प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकेगा क्योंकि सशक्त भाषा के बिना किसी भी राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850) ने इसीलिए कहा था, ‘निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल’। यह पाठ्यक्रम वर्तमान संदर्भों के अनुकूल है, साथ ही साथ इस पाठ्यक्रम का रूप रोजगारपरक भी है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को भाषा और साहित्य के व्यावहारिक अनुप्रयोग से अवगत करा सकेगा। हिंदी साहित्य की नई समझ और भाषा की व्यवहारिकता की जानकारी इसका प्रमुख ध्येय है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा और समाज के जटिल सम्बन्धों की पहचान कराना भी है, जिससे विद्यार्थी देश, समाज, राष्ट्र और विश्व के साथ बदलते समय में व्यापक सरोकारों से अपना सम्बन्ध जोड़ सके, साथ ही उसमें भाषा कौशल, लेखन और सम्प्रेषण क्षमता का विकास हो सके।

**अधिगम परिणामों पर आधारित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:**

* स्नातकोत्तर उपाधि के लिए क्षमता, आर्हता के साथ अधिगम परिणामों को सुनिश्चित करना।
* स्नातकोत्तर कार्यक्रम के पाठ्यक्रम के अधिगम परिणामों (ज्ञान, क्षमता, मूल्य) की प्रकृति व स्तर को समझने में मदद करना; साथ ही साथ यह निर्धारित करना पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद छात्रों में कैसी क्षमताएँ विकसित होंगी।
* अधिगम परिणामों के राष्ट्रीय मानकों को सुनिश्चित करना तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अकादमिक मानकों की समतुल्यता से वैश्विक प्रतिस्पर्धा को सुनिश्चित करना और स्नातकोत्तर छात्रों की पाठ्यक्रम गतिशीलता (दूसरे संस्थानों) को सुनिश्चित करना।
* उच्च शिक्षा के संस्थानों को अध्ययन-अध्यापन की रणनीति बनाने, छात्र के ज्ञानार्जन के स्तर के मूल्यांकन और अकादमिक पाठ्यक्रमों के मूल्यांकन और स्तर की नियमित समीक्षा के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ बिन्दु निर्धारित करना।

1.3 पाठ्यक्रम योजना और विकास के मुख्य परिणामों का निर्धारण

**अधिगम आधारित पाठ्यक्रम का ढाँचा उन अपेक्षित परिणामों और अकादमिक मानकों पर आधारित है, जिसकी पाठ्यक्रम के स्नातकोत्तर उपाधिधारी छात्र से अपेक्षा की जाती है।** पाठ्यक्रम योजना और विकास को रेखांकित करने वाले प्रमुख बिंदुओं में स्नातकोत्तर क्षमता, कार्यक्रम के परिणाम, कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम और पाठ्यक्रम के परिणाम शामिल हैं।

1.3.1 स्नातकोत्तर क्षमता

विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों का मुख्य जोर अनुशासनात्मक विशेषज्ञता और तकनीकी ज्ञान है। यही वह गुण है जो भविष्य में छात्रों को सामाजिक अच्छाई के प्रतिनिधि (प्रेरक) के रूप में निर्मित करेंगे। स्नातकोत्तर-शिक्षा प्राप्त छात्र में निम्न गुण व विशेषता अपेक्षित हैं (होनी चाहिए)-

1. **अनुशासनात्मक ज्ञान**: एक या उससे अधिक अनुशासनों का व्यापक ज्ञान और उसकी समझदारी अर्जित करना।
2. **शोधकार्य कौशल:** उपयुक्त/ उचित प्रश्न पूछने की क्षमता के साथ उचित तरीके से समस्या को सामने रखना; उसके संश्लेष और अभिव्यक्ति की क्षमता के साथ अनुसंधात्मक बोध का होना।
3. **विश्लेषण और तार्किकता:** साक्ष्यों की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने का सामर्थ्य; अन्य के तर्कों में मौजूद तर्कगत असंगति व दोष को चिंह्नित करने में सक्षमता।
4. **आलोचनात्मक क्षमता:** ज्ञान के क्षेत्र में विश्लेषणात्मक विचारों को प्रयोग करने की क्षमता।
5. **समस्या समाधान:** अर्जित ज्ञान के आधार पर भिन्न किस्म की समस्याओं का अवधारणाओं के अनुप्रयोग के द्वारा समाधान करना।
6. **संचार कौशल:** विचारों को लिखित और मौखिक रूप से प्रभावी ढंग से व्यक्त करने की क्षमता।
7. **सूचना प्रौद्योगिकी/ डिजिटल साक्षरता:** विभिन्न अध्ययन परिस्थितियों में कंप्यूटर व संचार तकनीक (ICT) के प्रयोग में सक्षम होने के साथ विभिन्न सूचना स्रोतों के अधिगमन, मूल्यांकन और प्रयोग करने में सक्षम होना; तथा जानकारियों/तथ्यों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त साफ्टवेयर का प्रयोग करने में सक्षम होना।
8. **स्व-निर्देशित शिक्षा:** स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता, किसी परियोजना के लिए आवश्यक उपयुक्त संसाधनों की पहचान करना और परियोजना के पूरा होने तक इसका प्रबंधन करना।
9. **सहयोग / टीम वर्क:** विभिन्न समूहों के साथ सम्मानपूर्वक और प्रभावी तरीके से काम करने की क्षमता।
10. **वैज्ञानिक तर्किकता:** मात्रात्मक/गुणात्मक सूचनाओं (तथ्यों) को विश्लेषित करने के साथ उसकी व्याख्या तथा उससे निष्कर्ष निकालने की क्षमता का होना; और खुले दिमाग और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से विचारों, साक्ष्यों और अनुभवों का समालोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होना।
11. **विचारपरकता:** स्व और समाज, दोनों ही स्तरों पर सजीव अनुभवों व स्व-चेतनशीलता के लिए आलोचनात्मक संवेदना होना।
12. **बहुसांस्कृतिक क्षमता:** बहुसांस्कृतिकता और वैश्विकता के मूल्यों और विश्वासों की जानकारी होना।
13. **नैतिक जागरूकता:** जीवन संचालक नैतिक मूल्यों के महत्व को पहचानने की क्षमता होने के साथ विभिन्न दृष्टिकोणों में निहित नैतिक मुद्दों को सैद्धांतीकृत करने की क्षमता और सभी कार्यों में नैतिक व्यवहार का प्रयोग करने में सक्षम होना।
14. **नेतृत्व तत्परता / गुण:** समूह या संगठन के कार्यों को निर्धारित करने की क्षमता के साथ दृष्टिकोण का निर्धारण; प्रेरणास्पद लक्ष्यों के निर्धारण में सक्षम होने के साथ उस समूह (टीम) के निर्माण में सक्षम होना जो इन कार्यों और लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक हो; इसके साथ प्रभावी तरीके से समूह सदस्यों को उचित दिशा-निर्देश देने की प्रबंध क्षमता का प्रयोग करने में सक्षम होना।
15. **जीवनपर्यंत शिक्षा:** ‘कैसे सीखे’ को जानने के साथ उस ज्ञान और कौशल को अर्जित करने की क्षमता का होना जो कि जीवनपर्यंत सीखने-जानने की गतिविधियों में भागीदारी के लिए अनिवार्य होती है; इस गतिविधि की अनिवार्यता व्यक्तित्व-विकास, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के लिए होने के साथ व्यवहारिक और कार्यस्थल की जरूरतों के मुताबिक ज्ञान/कौशल/पुनर्कौशल अर्जित करने के लिए होती है।

1.3.2 स्नातकोत्तर कार्यक्रम के लिए कार्यक्रम के लक्षित परिणाम **(POs)**

परिणाम लक्ष्य (POs) ऐसे विवरण हैं जो स्नातकोत्तर कार्यक्रम के जरिए उपाधि प्राप्त छात्र में होने ही चाहिए। ये वे संकेतक/मानक हैं जो कि स्नातकोत्तर उपाधि छात्रों के ज्ञान, कौशल और गुणवत्ता को इंगित करते हैं। ये निम्नवत हैं:

1. **गहन ज्ञान**: अध्ययन क्षेत्र से संबंधित अवधारणाओं की समझदारी और इससे संबंधित प्रक्रिया की जानकारी के साथ संदर्भित क्षेत्र के ज्ञान को अभिव्यक्त करना और दूसरे अनुशासनों और विषयगत अध्ययन से उसके संबंध की जानकारी का होना।
2. **विशिष्ट ज्ञान और कौशल**: अर्जित विशेषज्ञता के क्षेत्र में प्रक्रियागत ज्ञान और क्षमता को प्रदर्शित करने की क्षमता के साथ उस क्षेत्र में हुए विकास की समझदारी का होना और इस विशेषज्ञता के क्षेत्र में हुए नवीनतम् विकास की आलोचनात्मक समझदारी का होना; विशेषज्ञता के क्षेत्र में पहले से निर्धारित तकनीकों के विश्लेषण की क्षमता के साथ उसके प्रति जिज्ञासा का होना।
3. **विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच:** विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला और जटिल समस्याओं और उससे जुड़े दूसरे पहलुओं को जानने के साथ उसके विश्लेषण और आलोचनात्मक चिंतन में सक्षम होना।
4. **अनुसंधान और नवाचार:** विशेषज्ञता के क्षेत्र में वर्तमान शोध की स्थिति के बारे में व्यापक ज्ञान की अभिव्यक्ति; शोध समस्याओं की पहचानने की आलोचकीय क्षमता के साथ विशेषज्ञता के क्षेत्र में दूसरे स्रोतों की एक विस्तृत श्रृंखला से प्रासंगिक जानकारी एकत्र करना, परिणामाधारित शोधों को सूत्रबद्ध करने के लिए उचित पद्धति का प्रयोग करते हुए आँकड़ों के स्रोत की पहचान के साथ उसका विश्लेषण और व्याख्या करने में सक्षमता।
5. **अंतरअनुशासनिक दृष्टिकोण:** बौद्धिक खुलेपन के प्रति प्रतिबद्धता और विषयगत क्षेत्र में हो रहे विकास की समझदारी।
6. **संवाद क्षमता:** अनुशासनात्मक ज्ञान को व्यक्त करने की प्रभावी वाचिक और लिखित क्षमता के होने के साथ विषय से संबंधित मुख्य अवधारणाओं, संरचनाओं और तकनीकों का प्रयोग करते हुए अध्ययन परिणामों को सटीक तरीके से व्यक्त करने की क्षमता का होना।
7. **कैरियर विकास:** उच्च शिक्षा और रोजगार के लिए आवश्यक शैक्षणिक, पेशेवर, विशेषज्ञ कौशल और रोजगार योग्यता में दक्षता का होना।
8. **समूह कार्य क्षमता:** अंतरवैयक्तिक कौशल के साथ नेतृत्व गुण और समूह में कार्य करने की क्षमता।
9. **समाज और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता:** मनुष्यता के सामने दरपेश स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मौजूद सामाजिक, पर्यावरणिक, मानवीय और दूसरे मुद्दों की पहचान करना; राष्ट्रीय संस्कृति के बहुलतावादी चरित्र की महत्ता को स्वीकरने के साथ राष्ट्रीय एकता के मूल्य को पहचानना।

**1.3.3** पाठ्यक्रम के विशिष्ट परिणाम केंद्रित लक्ष्य **(PSOs)**- हिन्दी

पाठ्यक्रम केंद्रित विशिष्ट परिणामों में विषय केंद्रित कौशल और सामान्य कौशल के शामिल होने के साथ स्थानांतरीय वैश्विक कौशल और दक्षताएँ भी शामिल हैं। छात्रों के लिए इन सभी विशिष्टताओं को अर्जित करना स्नातकोत्तर उपाधि के लिए अनिवार्य है। पाठ्यक्रम केंद्रित अपेक्षित परिणामों का मुख्य जोर भविष्य के अध्ययन, रोजगार और नागरिक जीवन के लिए छात्रों को ज्ञान और कौशल को विकसित करना भी है। ये परिणाम विभिन्न विश्वविद्यालयों के अध्ययन स्तर और अकादमिक मानकों को तुलनात्मक रूप से स्पष्ट करने में सहायक होते हैं और पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले स्नातकोत्तर छात्रों की योग्यता की एक बृहतर तस्वीर सामने लाते हैं। इन परिणामों का अर्जन कार्यक्रम के सभी पाठ्यक्रमों के स्तर पर समग्र रूप से समाकलित होता है।

1. **आधारभूत अवधारणा:** साहित्य का अर्थ, उसकी उपयोगिता के साथ मनुष्य-जीवन में उसकी भूमिका को समझना।
2. **इतिहासबोध:** साहित्य अध्ययन का अनिवार्य अंग इतिहासबोध है क्योंकि अतीत की सामाजिक, आर्थिक, राजनीति और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझे बिना साहित्य को समझा नहीं जा सकता है।
3. **साहित्यिक रूपाकार:** साहित्यिक रूपाकारों से तात्पर्य रचनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि से हैं। इन रूपाकारों की विशिष्ट प्रकृति और इसके साहित्यिक मूल्य को समझना।
4. **आलोचना:** साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन आधारों से परिचय।
5. **आलोचनात्मक दृष्टिकोण:** इतिहास और साहित्य कृतियों के अंतर्संबंध का निर्धारण करने योग्य विवेक का होना।
6. **सामाजिक परिवर्तन:** साहित्यिक रूपाकारों में होने वाले कालाधारित परिवर्तनों को समझना।
7. **साहित्यिक-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग:** काव्यशास्त्र के सिद्धांतों के व्यवहारिक अनुप्रयोग में दक्षता।
8. **रचनात्मक क्षमता:** कला रूपों की प्रकृति को समझना और रचनात्मक तरीके से साहित्य के अवगाहन में सक्षम होना।
9. **शोधोन्मुखता व नवोंमेष:** साहित्य और साहित्येतिहास के क्षेत्र में अनुसंधान के भाव का होना।
10. **साहित्य और समाज संबंध:** साहित्य के समाज के रिश्ते को समझना।
11. **भाषिक क्षमता:** छात्रों में संवाद क्षमता होने के साथ जटिल आलोचनात्मक विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होना। इसके साथ भाषा के प्रायोगिक रूप (प्रयोजनमूलक) में दक्ष होना।

**1.3.4** *कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम*

***कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम***

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम** | 701 | 702 | 703 | 704 | 705 | 801 | 802 | 803 | 804 | 805 | 901 | 902 | 903 | 1001 |
| आधारभूत अवधारणा | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X |  |
| इतिहासबोध | X | X |  | X | X | X |  | X | X |  | X | X | X |  |
| साहित्यिक रूपाकार | X |  |  |  | X | X |  | X | X |  | X |  | X | X |
| आलोचना |  | X |  | X |  |  |  |  |  |  |  |  | X |  |
| आलोचनात्मक दृष्टिकोण |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | X |  | X |
| सामाजिक परिवर्तन |  | X | X | X |  | X | X | X |  | X | X | X |  |  |
| साहित्य-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग |  |  |  | X |  | X | X | X | X | X | X | X | X | X |
| रचनात्मक क्षमता |  | X |  | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X |
| शोधोन्मुखता व नवोंमेष |  | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X |  | X |
| साहित्य-समाज संबंध | X |  |  | X |  | X | X | X | X |  | X |  | X | X |
| भाषिक क्षमता | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X | X |

***कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम***- ***ऐच्छिक और विभाग केंद्रित ऐच्छिक विषय***

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **कार्यक्रम केंद्रित लक्षित परिणाम** | 706SEC1 | 806SEC2 | 904 SPL1 | 1002SPL2 | 905OPE1 | 1003OPE2 | 1004DPW | 706SEC1 | 806SEC2 | 904 SPL1 | 1002SPL2 | 905OPE1 |
| आधारभूत अवधारणा | x | x | x | X | x | x | x | x | x | X | x | x |
| इतिहासबोध | x | x | x | X | x | x | x | x | x | X |  | x |
| साहित्यिक रूपाकार | x |  |  | X | x | x |  |  |  |  | x | x |
| आलोचना |  |  |  |  |  |  |  |  |  | X |  |  |
| आलोचनात्मक दृष्टिकोण |  | x |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| सामाजिक परिवर्तन |  | x | x | X |  |  | x |  | x |  |  | x |
| साहित्य-मूल्यांकन पद्धतियों का अनुप्रयोग | x | x | x | X | x |  | x | x | x | X | x | x |
| रचनात्मक क्षमता |  | x | x | X | x |  | x |  | x | X | x | x |
| शोधोन्मुखता व नवोंमेष | x | x | x | X | x |  | x | x | x | X | x |  |
| साहित्य-समाज संबंध |  |  | x | X |  |  | x | x | x | X | x | x |
| भाषिक क्षमता | x | x | x | X | x | x | x | x | x | X | x | x |

1.4 अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया

कॉटन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में छात्र-केंद्रित शिक्षण प्रक्रिया को महत्व दिया गया है जिससे अर्जित ज्ञान छात्र के अनुभव का भी हिस्सा हो पाए। हर एक किस्म के शैक्षणिक व्याख्यान की प्रकृति संवादात्मक है, जिसमें छात्रों की सहभागिता के साथ प्रश्नोत्तर व संवाद के लिए व्याख्यान के अंत में समय निर्धारित है। पारंपरिक कक्षाओं के अलावा, ऑनलाइन माध्यम से भी व्याख्यानों की व्यवस्था है, जिससे छात्र सभी शिक्षकों से अपने संशयों और जिज्ञासाओं का समाधान कर सकते हैं। सूचना-तकनीक सुविधाओं का प्रयोग करते हुए पावर-पॉइंट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म तथा दूसरे अन्य प्लेटफार्मों के साथ आईसीटी के सुविधाओं का उपयोग करते हैं।

इस विभाग ने सहभागी शिक्षण पद्धतियों को अपनाया है, जिसमें संगोष्ठियाँ, प्रस्तुतियाँ और समूह-चर्चाएँ शामिल हैं। ये सहभागी शिक्षण पद्धतियाँ लगभग सभी सत्रों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। इनके अलावा छात्रों में ज्ञान की वृद्धि, नवीन विचारों से अवगत होने के लिए तथा उनमें वैश्विक, अकादमिक और अनुसंधान प्रगति से परिचित कराने के लिए विशेष कार्यशालाएँ, आमंत्रित विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आदि का आयोजन किया जाता है।

अल्पकालिक परियोजना कार्य, अनुसंधान की परियोजनाएं, असाइनमेंट आदि पाठ्यक्रमों के अभिन्न घटक हैं, जो छात्रों को व्यावहारिक समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाते हैं। इन पद्धतियों से इनके विषय संबंधित ज्ञान में वृद्धि करने की कोशिश की जाती है।

1.5 मूल्यांकन पद्धति

छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम की प्रकृति के अनुकूल विभिन्न तरीकों के मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम के विशिष्ट परिणाम लक्ष्यों के मूल्यांकन के लिए निम्न पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है: लिखित परीक्षाएँ समस्या आधारित गृहकार्य (असाइनमेंट); पुस्तक समीक्षाएँ; लघु शोध निबंध; मौखिक प्रस्तुतियाँ (सेमीनार); मौखिक प्रश्नोत्तर; कंप्यूटर आधारित परीक्षाएँ आदि।

Part II

**हिन्दी में स्नातकोत्तर कार्यक्रम की संरचना**

|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| **Semester** | **Course Code** | **Course Title** | **Credit** | **Total****Class** |
|  **I** | **HIN701C** | हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक) | **4** | **48** |
| **HIN702C** | हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास | **4** | **48** |
| **HIN703C** | मध्यकालीन साहित्य | **4** | **48** |
| **HIN704C** | भारतीय काव्यशास्त्र | **4** | **48** |
| **HIN705C** | भारतीय साहित्य | **4** | **48** |
| **HINSEC1** | प्रयोजनमूलक हिन्दी | **2** | **16** |
| **II** | **HIN801C** | हिन्दी साहित्य का इतिहास (19 वीं शताब्दी के मध्य के बाद) | **4** | **48** |
| **HIN802C** | आधुनिक हिन्दी कविता | **4** | **48** |
| **HIN803C** | हिन्दी गद्य के विविध रुप | **4** | **48** |
| **HIN804C** | पाश्चत्य काव्यशास्त्र | **4** | **48** |
| **HIN805C** | भाषा-विज्ञान,हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि | **4** | **48** |
| **HINSEC2** |  कार्यालयी हिन्दी | **2** | **16** |
|  **III** | **HIN901C** | हिन्दी आलोचना की परंपरा | **4** | **48** |
| **HIN902C** | आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य  | **4** | **48** |
| **HIN903C** | हिन्दी नाटक व एकांकी | **4** | **48** |
| **HINSPL1** | मध्यकालीन हिन्दी कविता | **4** | **48** |
| **HINOPE1** | छायावादी कवि एवं कविता  | **4** | **48** |
|  **IV** | **HIN1001C** | हिन्दी उपन्यास की परंपरा | **4** | **48** |
| **HINSPL2** | तुलनात्मक साहित्य | **5** | **48** |
| **HINOPE2** | विमर्श साहित्य (दलित /आदिवासी/स्त्री) | **4** | **48** |
| **HINDPW** | **Dissertation/Project Work (DPW)** | **6** | **80** |

**C: Core Course SPL: Special Paper OPE: Open Paper SEC : Skill Enhancement Course DPW: Dissertation/ Project Work .**

**Hindi Syllabus**

**SEMESTER-I**

**HIN701C**

**CREDIT: 4 (3+1+0)**

**TOTAL CLASS: 48**

प्रश्न-पत्र का नाम: हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)

**Course objective:-**

इस पाठ्यक्रम के जरिए हिंदी साहित्य, इसके इतिहास और विकास के बारे में जान सकेंगे। इसके साथ हिंदी साहित्य के विविध कालों में कविताओं का विस्तार इसके स्वरूप और विशेषताओं की जानकारी ले सकेंगे। हिंदी साहित्य के इतिहास की जानकारी ले सकेंगे। हिंदी साहित्य में कविताओं की विविधताओं के बारे में जान सकेंगे।

**Course learning outcomes:-**

इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसके अध्ययन के पष्चात हिंदी साहित्य का विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण कैसे किया जाए , उसकी सराहना कैसे की जाए और दिए गए पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए ताकि विद्यार्थी साहित्य के उद्देश्य से भली - भाँति परिचित हो सकेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **Unit** | **Contents** | **Nos of Classes** |
| I | हिन्दी साहित्य का आदिकालः प्रमुख प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, प्रमुख कवि व उपलब्धियां।  | **12** |
| II | भक्ति आंदोलनः अखिल भारतीय स्वरूप और विशेषताएं एवं मूल्यांकन । | **12** |
| III | हिन्दी भक्ति साहित्य: प्रमुख प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ; प्रमुख कवि; उपलब्धियाँ, मूल्यांकन ।  | **12** |
| IV | रीतिकाल: रीतिकाव्य और दरबारी संस्कृति; प्रमुख प्रवृत्तियाँ; मुख्य व गौण काव्यधाराएँ; प्रमुख कवि; उपलब्धियाँ एवं मूल्यांकन ।  | **12** |

**संदर्भ-ग्रंथ :**

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* बच्चन सिंह, *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन ।
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिन्दी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* राम कुमार वर्मा, *हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास* ।
* नगेन्द्र, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस ।
* विश्वनाथ त्रिपाठी, *हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।

**HIN702C**

**CREDIT: 4 (3+1+0)**

**TOTAL CLASS: 48**

**प्रश्न-पत्र का नाम : हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास**

Course Objective:

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को भाषा के विविध पक्षों का अध्ययन कराया जाएगा। बहु-भाषिक भारतीय परिवेश में यह महत्वपूर्ण है कि भारतीय भाषाओं से छात्रों का परिचय हो। इस पाठ्यक्रम में छात्र भारतीय आर्य भाषाओं के वर्गीकरण से परिचित हो पाएंगे। इसके साथ ही हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के बारे में अध्ययन प्रस्तावित है। हिन्दी की सभी बोलियों का विस्तृत अध्ययन पाठ्यचर्चा का अंग है। लिपि का विकास और भारत में प्रचलित विभिन्न लिपियों की जानकारी का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम में शामिल है।

Course Learning Outcome:

1. विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्त्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. भारत को एक सूत्र में बाँधनेवाली हिंदी भाषा की विविध बोलियों से परिचितहो सकेंगे।
3. विद्यार्थियों को हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।नागरी लिपि का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| I | हिन्दी की स्रोत भाषाएँ व पुरानी हिन्दी के विशिष्ट रूप (अवहट्ट, डिंगल, पिंगल) | 12 |
| II | हिन्दी भाषा का क्षेत्र, हिन्दी की उपभाषाएं और बोलियां, पूर्वी व पश्चिमी हिन्दी में अंतर | 12 |
| III | हिन्दी भाषा का विकास आदिकालीन, मध्यकालीन और आधुनिक हिन्दी,हिन्दुस्तानी, उर्दू, दक्खिनी हिन्दी, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी  | 12 |
| IV | लिपि : परिभाषा, आरंभिक स्वरूप व आवश्यकता, विभिन्न रूप- चित्रलिपि, भावलिपि व ध्वनिलिपि, भाषा व लिपि का संबंध,देवनागरी लिपि : परिचय व विकास, देवनागरी लिपि की मानकीकरण, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ | 12 |

संदर्भ-ग्रंथ

* बाबूराम सक्सेना, *सामान्य भाषाविज्ञान*, दिल्ली
* आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा/दीप्ति शर्मा, *भाषाविज्ञान की भूमिका*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
* भोलानाथ तिवारी, *भाषा विज्ञान*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन
* भोलानाथ तिवारी, *हिंदी भाषा का इतिहास*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन
* भोलानाथ तिवारी, *हिन्दी भाषा*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन
* हरदेव बाहरी, *हिंदी उद्भव, विकास और रूप*, दिल्ली
* राजमणि शर्मा, *हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप*, दिल्ली
* उदय नारायण तिवारी*, हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, दिल्ली*

**HIN703C**

**Credit : 4 (3+ 1+0)**

**Total Classes : 48**

**प्रश्न पत्र का नाम : मध्यकालीन साहित्य**

**Course Objective :**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन इतिहास का विश्लेषणात्मक ज्ञान देना। मध्यकालीन काव्य के सौन्दर्य चेतना ,लोक संस्कृति,काव्यशास्तीय चिंतन की परंपरा को जान सकेगा।मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का कथ्य शिल्प और स्वरूप समझ सकेगा।विभिन्न कवियों और उनकी कविताओं का विशिष्टज्ञान प्राप्त होगा।

**Course Learning Outcomes :**

* हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन युग का विशिष्ट ज्ञान।
* प्रमुख कवियों व उनकी कविता की समझ विकसित होगी।
* मध्यकालीन कविताओं की विविधताओं को समझेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| 1 | विद्यापति – विद्यापति पदावली,संपा.रामवृक्ष बेनीपुरी,(आरंभिक 10 पद),, कबीर – संपा. हजारी प्रसाद द्विवेदी (दोहा -161-170) | 12 |
| 2 | जायसी- पदमावत,संपा. वासुदेव शरण अग्रवाल (नागमती वियोग पहले 10 पद),,सूरदास,संपा.रामचन्द्र शुक्ल (भ्रमरगीत सार से 10 पद),, | 12 |
| 3 | तुलसीदास – रामचरित मानस: बालकाण्ड में ‘पुष्पवाटिका’प्रसंग( पहले 10 पद), मीरा का काव्य , संपा.विश्वनाथ त्रिपाठी,( 10 पद) | 12 |
| 4 | बिहारी रत्नाकर,जगन्नाथ दास संपा. (10 दोहे),,घनानंद कविता,संपा. विश्वनाथ मिश्र (10 छंद)  | 12 |

संदर्भ – ग्रंथ :-

* रामचंद्र शुक्ल,*हिन्दी साहित्य का इतिहास*,प्रकाशन संस्थान,दिल्ली
* विजेन्द्र स्नातक,*कबीर*, राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, *कबीर*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* माता प्रसाद गुप्त,*कबीर ग्रंथावली*, नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी
* रामचंद शुक्ल,*जायसी ग्रंथावली*,नागरी प्रचारणी सभा ,वाराणसी
* रामचंद्र शुक्ल,*सूरसागर*,नागरी प्रचारणी सभा,वाराणसी
* तुलसीदास,*रामचरित मानस सटीक*,गोरखपुर,गीता प्रेस
* विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी,*मीरा का काव्य*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* रामचंद्र शुक्ल, *सूरसागर –भ्रमरगीत सार*, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
* विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, *धनानंद कविता*, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
* जगन्नाथ दास रत्नाकर-*बिहारी रत्नाकर*,
* भागीरथ मिश्र, *हिन्दी का रीति साहित्य*, राजकमल प्रकाशन
* हसबंसलाल शर्मा ,*बिहारी और उनका साहित्य*,भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़

**Paper Code: HIN 704C**

**Credit: 04 (Lecture-3, Tutorial-1, Practical-0)**

**Total Classes: 48**

**प्रश्न पत्र का नाम : भारतीय काव्यशास्त्र**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय काव्यशास्त्र की संपूर्ण रूपरेखा से परिचित करवाना है। हिंदी साहित्य के अध्ययन के अंतर्गत काव्यशास्त्र को एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में माना जाता है, अतः इस पाठ के जरिये स्नाताकोत्तर छात्रों को भारतीय काव्य-चिंतन परंपरा और इस परंपरा से जुड़े आचार्यों के मत से अवगत करवाना है।

**Course Learning Outcome:**

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत, छात्र

* भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत काव्य के अर्थ और उसकी व्यापकता को समझेंगे
* काव्य के आत्म तत्व, स्वरूप एवं लक्षण को जानेंगे
* काव्य-तत्व, भेद तथा प्रयोजन को पहचानेंगे
* काव्यशास्त्रीय विभिन्न सिद्धांत – संप्रदायों का परिचय प्राप्त करेंगे

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | भारतीय साहित्य-चिंतन परंपरा एवं विभिन्न संप्रदाय, काव्यहेतु, काव्यलक्षण,काव्यप्रयोजन, काव्य-भेद, काव्यगुण, काव्यदोष, काव्य की आत्मा, शब्द शक्ति।  | 12 |
| II | रस-अर्थ, स्वरूप रस संप्रदाय, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, रस के अंग। | 12 |
| III | ध्वनि- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, ध्वनि संप्रदाय, महत्व । अलंकार- अर्थ,परिभाषा,भेद,प्रकार | 12 |
| IV | वक्रोक्ति- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, वक्रोक्ति संप्रदाय, भेद।औचित्य- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप,भेद, औचित्य संप्रदाय। | 12 |

संदर्भ ग्रंथः

* गुलाबराय, *काव्य के तत्व*, आत्माराम एंड संस, दिल्ली ।
* कृष्णदेवझारी, *साहित्यालोचन*, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली।
* बलदेव उपाध्याय, *भारतीय साहित्यशास्त्र*- वाराणसी।
* सत्यदेव चौधरी, *भारतीय काव्यशास्त्र शिक्षण*- अलंकार प्रकाशन, दिल्ली।
* उदयभानुसिंह(संपा.), *भारतीय काव्यशास्त्र*- राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली**।**
* आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, *काव्यालंकार-* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।
* राममूर्ति त्रिपाठी, *भारतीय काव्य विमर्श,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

**HIN705C**

**CREDIT: 4(3+1+0) TOTAL CLASS: 48**

**प्रश्न-पत्र का नाम : भारतीय साहित्य**

**Course Objective:**

‘भारतीय साहित्य’ शीर्षक पत्र में भारतीय साहित्य की महान कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन शामिल है। बांग्ला, तमिल, मलयालम, उर्दू, पंजाबी, अंग्रेजी, असमीया जैसी भारतीय भाषाओं की कृतियों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो सकेगा कि किस तरह से विभिन्न भाषाओं में अभिव्यक्ति के बावजूद भारतीय साहित्य सारभूत रूप से एक है और एकता का यह तत्व भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। भारतीय संस्कृति की एकता को अभिव्यक्त करने के सिवा इस पत्र का केंद्रण साहित्यिक स्तर पर भारतीय भाषाओं में पारस्परिक आदान-प्रदान को समझने पर भी है।

Course Learning Outcome:

1. भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित हो पाएंगे।
2. भारतीय संस्कृति की एकता के भाव को साहित्यिक अभिव्यक्ति के जरिए समझ पाएंगे।
3. भारतीय साहित्य की महान कृतियों से परिचित हो पाएंगे और उनका आलोचनात्मक अनुशीलन कर पाएंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **भारतीय साहित्य की अवधारणा ।** | 12 |
| II | **भारतीय साहित्य की परंपरा ।** | 12 |
| III | **भारतीय साहित्य की कालजयी कृतियां-1 (रवींद्रनाथ टैगोर-गोरा, सुब्रमणियम कविताएं,तकषी शिवशंकर पिल्लै-चेम्मीन) ।**  | 12 |
| IV | **भारतीय साहित्य की कालजयी कृतियां-2(कुर्तुलएन.हैदर-आग का दरिया, गुरदयाल सिंह- मढी का दीवा, रमा मेहता- हवेली के अंदर, इंदिरा गोस्वामी-नीलकंठी ब्रज)** | 12 |

**संदर्भ-ग्रंथ :**

* रवीन्द्र नाथ टैगोर, *गोरा*, दिल्ली, साहित्य अकादमी ।
* रवीन्द्र नाथ टैगोर, *रवीन्द्र रचनावली*, दिल्ली, साहित्य अकादमी ।
* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* नगेन्द्र, *भारतीय साहित्य*, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन ।
* के सच्चिदानंद, *भारतीय साहित्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* तारक नाथ बाली, *भारतीय साहित्य सिद्धांत*, दिल्ली,शब्दकार ।
* राम विलास शर्मा, *भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन ।
* तकषि शिव शंकर पिल्लै(भारती विद्यार्थी), *मछुवारे*, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी ।
* तकषि शिव शंकर पिल्लै (पी. कण्णन), *कथा एक प्रांतर की*,दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ ।
* तकषि शिव शंकर पिल्लै(एन. कुट्टन पिल्लै), *कालम*, दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
* तकषि शिव शंकर पिल्लै (राकेश कालिया),*धान*, नई दिल्ली, एन.बी.टी ।
* गुर दयाल सिंह, *मढीकादीवा*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* Sisir Kumar Das, *History of Indian Literature:* 1911-1956, Struggle for Freedom: Triumph and Tragedy, Delhi, Sahitya Academy.
* Amiya Dev, *Idea of Comparative Literature*, Calcutta.

**HINSEC1**

**CREDIT:2(1+1+0) TOTAL CLASS:16**

**प्रश्न-पत्र का नाम : प्रयोजनमूलक हिन्दी**

Course Objective:

यह प्रश्नपत्र छात्रों को भाषिक क्षमता के विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। कार्यालयों में इस्तेमाल होने वाली भाषा के विभिन्न रूपों के सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूपों का अध्ययन इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है। इसके साथ संवैधानिक रूप से हिन्दी भाषा की स्थिति तथा केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग की अनिवार्यता के विषय में भी छात्रों प्रशिक्षित करना इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है।

Course Learning Outcome:

1. छात्र कार्यालय में भाषा प्रयोग के स्वरूप को समझ पाएंगे।
2. हिन्दी में कार्यालयी पत्र को लिखने में सक्षम हो पाएंगे।
3. राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति से परिचित हो पाएंगे।

कार्यालयी पत्रों के अनुवाद के सैद्धांतिक व व्यवहारिक स्वरूप से परिचित हो पाएंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **कामकाजी हिन्दी सर्जनात्मक भाषा, संपर्क भाषा । राजभाषा,मानक हिन्दी,संविधान में हिन्दी ।** | 08 |
| II | **कार्यालयी हिन्दी (आलेखन टिप्पणी,पत्र-लेखन, वार्ता, सरकारी पत्राचार)****पत्रकारिता : अवधारणा एवं प्रक्रिया,पत्रकारिता कीभाषा ।** | 08 |

**संदर्भ-ग्रंथ**

* विजय पाल सिंह, *कायार्लयी हिन्दी*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
* डॉ. भोला नाथ तिवारी, *राजभाषा हिन्दी*, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन ।
* के.न.गोस्वामी वसरोज मार्कंडेय, *आकाशवाणी वार्ताएं(तीनखण्ड)* ।
* डॉ. रवीन्द्र मिश्रा, *दृश्य, श्रृव्य माध्यम लेखन*, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
* पूरन चंद टंडन*,फीचर लेखन*, दिल्ली ।
* पी.के. आर्य*, फीचर लेखन,* दिल्ली, विद्या विहार ।
* देवन्द्र इश्वर,*जनमाध्यम संप्रेषण और विकास* ।
* एस. पी. दीक्षित, *जनसंचारःप्रकृति और परंपरा* ।
* आर. के. पाण्डेय, *मीडिया का यथार्थ* ।
* सुधीश पचौरी, *मीडिया की परख*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* एस. पी. दीक्षित,*मीडिया लेखन कला*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
* एन. सी. पंत, *मीडिया लेखन के सिद्धांत*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
* आर. सी. त्रिपाठी, *मीडिया लेखन* ।
* रामचंद्र जोशी, *मीडिया विमर्श*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* सुधीश पचौरी एवं अचला शर्मा, *नए संचार माध्यम और हिन्दी*, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।

**SEMESTER II**

**HIN801C**

**CREDIT: 4 Total Classes: 48**

**प्रश्न-पत्र का नाम :आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास**

**(19वीं शताब्दी के मध्य के बाद)**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल से अवगत करवाना है। आधुनिक काल में आयी नवजागरण की लहर के व्यापक स्वरूप एवं उसके प्रभाव से परिचित करवाना है। साथ ही छात्रों को आधुनिकयुगीन विभिन्न काव्यधाराओं की प्रवृत्तियों तथा स्वातंत्र्योत्तर काव्यधाराओं की पृष्ठभूमि से परिचित करवाना है।

Course Learning Outcome:

1. आधुनिक काल के अंतर्गत आधुनिक और आधुनिकता के अर्थ को समझ पायेंगे
2. हिन्दी की विभिन्न गद्य विधाओं से परिचित होंगे
3. हिन्दी की अन्य गद्येतर विधाओं को भी जान पायेंगे

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **भारतीय नवजागरण एवं हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव ।** **स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी साहित्य ।** | 12 |
| II | **भारतेन्दु युग, द्विवेदीयुग, छायावाद, उत्तर-छायावाद, प्रगतिवादी आंदोलन, नई कविता, प्रयोगवाद, साठोत्तरी कविता, समकालीन/अद्यतन हिन्दी कविता ।**  | 12 |
| III | **आधुनिक हिन्दी काव्य— सामान्य विवेचन ।** **आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य-विविध विधाएं, विशिष्ट उपलिब्धयां ।** | 12 |
| IV | **आधुनिक हिन्दी आलोचना: स्वरुप और प्रकार ।** | 12 |

**संदर्भ-ग्रंथ :**

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* नंददुलारे बाजपेई, *आधुनिक हिन्दी साहित्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* डॉ.राव प्रसाद मिश्रा, *हिन्दी साहित्य का इतिहास* ।
* डॉ.नगेन्द्र, *आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियां* ।
* रामविलास शर्मा, *लोक जागरण और हिन्दी साहित्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* रामचंद्र तिवारी, *हिन्दी का गद्य साहित्य*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
* नंददुलारे बाजपेई, *बीस वीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* लक्ष्मी सागरवार्ष्णेय, *स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास*
* बच्चन सिंह, *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* नामवर सिंह, *दूसरी परंपरा की खोज*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* डॉ.गुलाब राय, *हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास* ।
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिन्दी साहित्य का उद्भव व विकास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, *हिन्दी साहित्य का उद्भव व विकास*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* शिवकुमार मिश्र, *साहित्य इतिहास और संस्कृति*, वाणी प्रकाशन ।

**HIND802C**

**CREDIT 4, No Of class 48**

**प्रश्न पत्र का नामः आधुनिक हिन्दी कविता**

**Course objective:-**

* इस पाठ्यक्रम के जरिए पाठक हिन्दी कविता के विधा के बारे में परिचित होगें। आधुनिक हिंदी काव्यधारा से परिचित होते हुए, इस कालखंड के कवियों की काव्य प्रवृत्तियों से भी अवगत हो सकेंगे। साथ ही साथ आधुनिक हिंदी कवियों के भाषा शैली से परिचित हो सकेंगे और उन कविताओं की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

**Course learning outcomes:-**

* आधुनिक हिंदी कविता और समकालीन कवि विषयवस्तु से परिचित हो सकेंगे।
* आधुनिक हिंदी कवि और उनकी विचारधाराओं से परिचित हो सकेंगे।
* आधुनिक हिंदी कवियों के भाषा शैली से परिचित हो सकेंगे।
* आधुनिक हिंदी कविताओं की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No Of Classes |
| I | साकेत -9 वां सर्ग ( मैथिली शरण गुप्त) , कामायनी (प्रसाद)-लज्जा व इड़ा सर्ग, अपरा (निराला)- सरोजस्मृति,तोड़ती पत्थर,विधवा,,(पंत)- परिवर्तन, नौकाविहार, अल्मोड़े का बसंत। | 12 |
| II | कुरूक्षेत्र (दिनकर)- प्रथम सर्ग,बैठा हूं कि केन किनारे पल्थी मारे(केदारनाथ अग्रवाल), असाध्य वीणा (अज्ञेय), भूलगलती ( मुक्तिबोध) | 12 |
| III | लेकर सीधा नारा (शमशेर), लोग भूल गए (रघुवीर सहाय), पटकथा (धूमिल), कविता क्या है (केदारनाथ सिंह),बच्चे काम पर जा रहे हैं (राजेश जोशी) | 12 |
| IV | मई का एकदिन (अरूण कमल), मुसलमान (देवीप्रसाद मिश्र), जितेन्द्र श्रीवास्तव (सोन-चिरई) | 12 |

संदर्भ – ग्रंथ :-

* नामवर सिंह, *कविता के नए प्रतिमान*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
* सत्यकाम विद्यालंकार, *काव्य सुषमा*, दिल्ली, नया साहित्य
* विश्वनाथप्रसाद तिवारी, *समकालीन हिन्दी कविता*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
* रामस्वरूप चतुर्वेंदी, *आधुनिक कविता यात्रा*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
* रामनारायण शुक्ल (व अन्य) (संपा.), *छायावादोत्तर काव्य संग्रह*, वाराणसी, संजय बुक सेंटर

**HIN803C**

**CREDIT: 4(3+1+0)**

**TOTAL CLASS: 48**

प्रश्न – पत्र का नाम : हिन्दी गद्य के विविध रूप

Course Objective :

 इस पाठ्यक्रम में छात्रों कों हिन्दी साहित्य में अन्य गद्य विधाओं के इतिहास का विश्लेषण को जान सकेगा। गद्य के विविध रूपों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा। विविध विधाओं के विभिन्न लेखकों और उनकी कृतियों का विशिष्ट ज्ञान मिलेगा। विविध विधाओं के महत्व को जान सकेगा।

Course Learning Outcomes :

* हिन्दी साहित्य के गद्य का विशिष्ट ज्ञान ।
* प्रमुख लेखको के कृतियों की समझ विकसित होगी ।
* गद्य विधाओं के माध्यम तत्कालीन परिवेश का ज्ञान मिलेगा ।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit  | Content | Nos of Classes |
| 1 | निबंध \* भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है – भारतेंदु हरिचंद \* नीलकंठ उदास – कुबेरनाथ राय \* मित्रता – रामचंद्र शुक्ल \* नाखून क्यों बढ़ते हैं – हजारी प्रसाद द्विवेदी   | 12 |
| 2 | आत्मकथा एवं जीवनी  \* सत्य के प्रति मेरे प्रयोग(भाग I , II) – महात्मा गांधी  \* आवारा मसीहा( पहला खंड- दिशाहारा ) – विष्णु प्रभाकर  | 12 |
| 3 | रेखाचित्र एंव संस्मरण \*अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा ( बालिका माँ , अभागी स्त्री) \* शरद : एक याद –अमृतलाल नागर | 12 |
| 4 | यात्रावृत्तांत एंव व्यंग साहित्य एंव रिपोर्ताज \* मेरी तिब्बत यात्रा ( ल्हासा से उत्तर की ओर,नेपाल की ओर) – राहुल सांकृत्यायन \* वैष्णव की फिसलन – हरिशंकर परसाई \* अदम्य जीवन – रांगेय राधव. | 12 |

संदर्भ – ग्रंथ :-

* रामचंद्र शुक्ल , *हिन्दी साहित्य का इतिहास* , प्रकाशन संस्थान,दिल्ली
* रामचंद्र तिवारी,*हिन्दी गद्य के विविध रूप,* विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
* डॉ. नगेन्द्र, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली
* रामस्वरूप चुतर्वेद,*हिन्दी गद्य विन्यास और विकास*, लोकभारती,इलाहबाद
* डॉ उर्मिला मोदी, *संस्मरण और रेखाचित्र*,अनुराग प्रकाशन , बाराणसी

**Paper Code: HIN 804C**

**Credit: 04 (Lecture-3, Tutorial-1, Practical-0)**

**Total Classes: 48**

**प्रश्न पत्र का नामःपाश्चात्य काव्यशास्त्र**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य-चिंतन परंपरा के अंतर्गत प्राचीन यूनानी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य से परिचय करवाना है। भारतीय काव्य-चिंतन परंपरा के साथ ही पाश्चात्य चिंतन परंपरा से अवगत होना छात्रों के लिए आवश्यक है, इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम में पाश्चात्य काव्यशास्त्र से जुड़े काव्यशास्त्रियों एवं उनके सिद्धांतों को रखा गया है।

**Course Learning Outcome:**

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत, छात्र

* विभिन्न पाश्चात्य दार्शनिकों की कला संबंधी मान्यताओं को जान पायेंगे
* पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पृष्ठभूमि एवं उसकी विशेषताओं को समझ पायेंगे
* विभिन्न सिद्धांतों और वादों से परिचित होंगे
* शास्त्रवाद और नव्यशास्त्रवाद का अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | पाश्चात्यकाव्यशास्त्रकीचिंतन-परंपरा व इतिहास | 12 |
| II | प्लेटो, अरस्तू, लांजाइनस के काव्य सिद्धान्त | 12 |
| III | मध्ययुगीन चिंतक -वडर्सवर्थ, कॉलरिज, मैथ्यू आर्नाल्डआधुनिकयुगीन चिंतक- इलियट, रिचर्डस, क्रोचे के साहित्य सिद्धान्त | 12 |
| IV | आभिजात्यवाद, नव्य आभिजात्यवाद, स्वच्छन्दतावादमार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, न्यू क्रिटिसिज्म | 12 |

**संदर्भ ग्रंथः**

* श्याम सुंदर दास, *साहित्या लोचन*- इंडियन प्रेस,प्रयाग।
* बच्चन सिंह, *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्रःतुलनात्मक अध्ययन*- साहित्य अकादमी, पंचकूला, हरियाणा।
* नामवर सिंह(संपा.), *कार्ल मार्क्स: कला एवं साहित्य चिंतन*- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
* निर्मला जैन, *काव्य-चिंतन की पश्चिमी परंपरा*- वाणी प्रकाशन,दिल्ली।
* सिगमंड फ्रायड, *मनोविश्लेषण- राजपाल एण्ड संस* , दिल्ली।
* देवेन्द्र नाथ शर्मा, *पाश्चात्य काव्य शास्त्र*- नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
* भागीरथ मिश्र,*पाश्चात्य काव्यशास्त्रःइतिहास, सिद्धांत और वाद*- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
* W. K. Wimsatt& Beardsley, *Literary Criticism- A Short History*- Oxford IBH, NewDelhi.
* T. S. Eliot, *Selected Essays- Faber & Faber*, London.

**HIN805C**

**CREDIT: 4(3+1+0)**

**TOTAL CLASS: 48**

**प्रश्न-पत्र का नाम : भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि**

Course objective :

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को भाषा विज्ञान के विविध पक्षों का अध्ययन कराया जाएगा। बहु-भाषिक भारतीय परिवेश में यह महत्वपूर्ण है कि भारतीय भाषाओं से छात्रों का परिचय हो। इस पाठ्यक्रम में छात्र ध्वनि विज्ञान, रुप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, हिन्दी भाषा की व्याकरणिक कोटियां से परिचित हो पाएंगे। इसके साथ ही लिपि का विकास और भारत में प्रचलित विभिन्न लिपियों की जानकारी का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम में शामिल है।

Course learning outcomes :

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा-

1. विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के भाषा वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त होगा।

2. हिन्दी भाषा के व्याकरण संबंधित ज्ञान पहले से ओर ज्यादा परिपुष्ट होगा ।

3. विद्यार्थियों को हिंदी के अर्थ-विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। नागरी लिपि का अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| I | ध्वनि विज्ञानः स्वरूप, स्वर-व्यंजन का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन | 12 |
| II | रुप विज्ञान: परिभाषा, निर्माण, भेद, परिवर्तन | 12 |
| III | वाक्य विज्ञान: वाक्य और पद, मुख्य अवयव, अन्विति, पद क्रम, पदबंधअर्थ विज्ञानः अर्थ की परिभाषा, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएं | 12 |
| IV | हिन्दी भाषा की व्याकरणिक कोटियां- लिंग, वचन, कारक, कालदेवनागरी लिपि: उद्भव और विकास, लिपि की वैज्ञानिकता, अभिव्यक्ति क्षमता, दोष और गुण, असमीया लिपि से तुलनात्मक अध्ययन | 12 |

संदर्भ-ग्रंथ :

* रामचंद्र वर्मा, *अच्छी हिन्दी*, इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन
* बाबूराम सक्सेना, *सामान्य भाषाविज्ञान* ।
* कपिल देव द्विवेदी, *भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र*
* भोलानाथ तिवारी, *हिन्दी भाषा*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन
* भोलानाथ तिवारी, *भाषा विज्ञान*, दिल्ली, किताब महल
* एस.शेख, *देवनागरीलिपि*, नवासा राष्ट्रीय हिन्दी परिषद
* ओमप्रकाश भाट्या, *नागरी लिपि का उद्भव और विकास*
* टी. चौधरी, *भाषा और भाषाविज्ञान*, दिल्ली
* डी. पी. सक्सेना, *भाषाविज्ञान के सिद्धांत और हिन्दी भाषा*, दिल्ली। हरदेव बाहरी, हिन्दी- स्वरूप उद्भव व विकास लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

**HINSEC2**

**CREDIT:2(1+1+0)**

**TOTAL CLASS: 16**

**प्रश्न-पत्र का नाम : हिन्दी कम्प्यूटिंग**

Course Objective:

‘हिन्दी कंप्यूटिंग’ शीर्षक पत्र में कंप्यूटर में हिन्दी अनुप्रयोग की चर्चा है। इस पत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र को हिन्दी भाषा के माध्यम से किस तरह से प्रयोग किया जाए, इससे संबंधित अध्ययन को शामिल किया गया है। यूनीकोड के साथ अन्य विभिन्न तरीकों से हिन्दी टाइपिंग के तरीकों का अध्ययन भी इस पत्र में शामिल है।

Course learning Outcome:

1. यूनीकोड के कार्य करने के तरीके को समझ सकेंगे।
2. हिन्दी टाइपिंग के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. कंप्यूटर पर हिन्दी में दस्तावेज, लेख या शोधपत्र लेखन को सीख सकेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **कम्प्यूटर के विकास का इतिहास :****कम्प्यूटर का परिचय और विकास,हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर,****कम्प्यूटर के विभिन्न ऑपरेटिंग सिस्टम का संक्षिप्त परिचय (डास,लाइनेक्स,विंडोस के वर्जन1998,2000.2003,2007,और 2010)** **कम्प्यूटर भाषा का विकास और विभिन्न भाषाएँ ।** | 08 |
| II | **ऑपरेटिंग सिस्टम:****विंडोस और मैकसिस्टम,लिनक्स तथा ओपेनसोर्स।** **फ़्रांट्स और कुंजीपटल का मानकीकरण ।****आरंभिक पहल और जिस्ट प्रौद्योगिकी ।** **विभिन्न फ़्रोंट और ओपेनसोर्स की आवश्यकता ।** **हिन्दी के फोंट्स- क्रुतिदेव, मंगल,यूनिकोड ।** **इंटरनेट और इलेक्ट्रानिक मेल :****इंटरनेट का सामान्य परिचय एवं अनुप्रयोग ।** **इलेक्ट्रानिक मेल का संचालन एवं प्रबंधनम ।** | 08 |

**संदर्भ ग्रंथ :**

* शंकर सिंह, *कम्प्यूटर और सूचना तकनीकी* –पूर्वाञ्चल प्रकाशन,दिल्ली
* राम बंसल विज्ञाचार्य, *प्रारंभिक कम्प्यूटर शिक्षा भाग -1 –*वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
* राम बंसल विज्ञाचार्य, *प्रारंभिक कम्प्यूटर शिक्षा भाग* -2 –वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
* राम बंसल विज्ञाचार्य, *प्रारंभिक कम्प्यूटर शिक्षा भाग* -3 –वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
* हरी मोहन, *कम्प्यूटर और हिन्दी* 2 –तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
* P.K. Sinha, *Computer fundamentals* –BPB,Publication,NewDelhi
* *कम्प्यूटर के विकास का इतिहास* ।

**SEMESTER – III**

**HIN901C**

**CREDIT: 4(3+1+0)**

**TOTAL CLASS: 48**

**प्रश्न-पत्र का नाम : हिन्दी आलोचना की परंपरा**

**Course Objective:**

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को आलोचना विधा के स्वरूप से परिचित कराने के साथ आलोचना विधा के साहित्यिक और सामाजिक औचित्य से परिचित कराना है। आलोचना साहित्य-मूल्यांकन की विधा है, लेकिन इसके साथ इस विधा का सामाजिक महत्व भी है। विभिन्न विचारों का प्रभाव भी इस विधा पर सबसे ज्यादा दिखाई देता है। इस रूप में आलोचना और विचारधारा के संबंध से भी छात्रों को परिचित कराना इस पाठ्यचर्या का एक अन्य उद्देश्य है।

Course learning outcome:

1. छात्र हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की रचनाओं से परिचित हो पाएंगे।
2. इसके साथ में हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से साहित्य और इतिहास मूल्यांकन के विविध आयामों से भी छात्र परिचित हो पाएंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **हिन्दी आलोचना का उदय एवं विकास ।** | 12 |
| II | **रामचंद्र शुक्ल(कविता क्या है) । बाबूश्याम सुंदरदास (भूमिका- कबीर ग्रंथावली) ।**  | 12 |
| III | **नंददुलारे बाजपेई (प्रेमचंद: एक साहित्यिक विवेचन) । रामविलास शर्मा (परंपरा का मूल्यांकन) । डॉ.नगेन्द्र (सुमित्रानंदनपंत) ।**  | 12 |
| IV | **हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली (ज्ञानदशा, भावदशा, हृदय की मुक्तावस्था, लोकमंगल, विरुद्धों का सामंजस्य, विभावन व्यापार, विसंगति व विडंबना, सहानुभूति व स्वानुभूति) ।**  | 12 |

**संदर्भ-ग्रंथ :**

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* रामचंद्र शुक्ल, *चिंतामणि(दो खण्ड)*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* हजारी प्रसाद द्विवेदी,*हिन्दी साहित्य की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* राम विलास शर्मा, *परंपरा का मूल्यांकन*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* रामविलास शर्मा, *महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* रामविलास शर्मा, *भारतेन्दु हरिश्चंद और हिन्दी नवजागरण*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
* रामविलास शर्मा, *नई कविता और अस्तिववाद*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।

**HIN902C**

**Credit : 4 ( 3+1+0)**

**Total Classes : 48**

**प्रश्न पत्र का नाम : आधुनिक हिन्दी कथा – साहित्य**

Course Objective :-

 इस पाठ्यक्रम में छात्रों कों हिन्दी साहित्य के हिन्दी कथा साहित्य परम्परा का आरभ्मिक रूपों का ज्ञान प्राप्त होगा।कहानी के स्वरूप ,कहानी- कला का प्रौढ़ रचना काल को जान पायेंगे।

कहानी की विकास यात्रा , कथ्य शिल्प से परिचित होगा।कहानी-शिल्प के माध्यम से कहानी तत्वों और विविध शैलिय़ों का परिचय प्राप्त होगा। विभिन्न लेखकों और उनकी रचनाओं का विशिष्ट ज्ञान मिलेगा।कथा- साहित्य में समकालीन समस्याएँ और जीवन को जान पायेंगे।

Course Learning Outcomes :-

* हिन्दी साहित्य के कथा- साहित्य का विशिष्ट ज्ञान।
* प्रमुख लेखकों और उनकी रचनाओं की समझ विकसित होगी।
* कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति ज्ञान ।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| 1 | हिन्दी कहानी : उद्भव व विकास  | 12 |
| 2 | उसने कहा था(चंद्रधर शर्मा गुलेरी), सद्गति(प्रेमचन्द), आकाश दीप(जयशंकर प्रसाद),  | 12 |
| 3 | शरणदाता ( अज्ञेय), आर्द्रा ( मोहन राकेश)चीफ की दावत(भीष्म साहनी), परिंदे ( निर्मल वर्मा) | 12 |
| 4 | इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर (हरिशंकर परसाई), वापसी (उषा प्रियंवदा), सजा (मन्नू भंडारी) | 12 |

संदर्भ- ग्रंथ :-

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
* कमलेश्वर- *नई कहानी की भूमिका,*
* *हिन्दी कहानी :अंतररंग परिदृश्य*
* विजय मोहन सिंह, *आज की हिन्दी कहानी*, भारतीय ज्ञानपीठ,दिल्ली
* नामवर सिंह, *कहानी :नई-कहानी*, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
* विजय मोहन सिंह- *समय और साहित्य*.

**HIN903C**

**CREDIT: 4 TOTAL CLASS:48**

**प्रश्न-पत्र का नाम : हिन्दी नाटक व एकांकी**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को हिन्दी नाट्य परंपरा से परिचित करवाना है। नाट्य विधा की शुरूवात संस्कृत नाटकों से मानी जाती है, अतः छात्रों को संस्कृत नाटक का संक्षिप्त परिचय प्रदान करते हुए हिन्दी नाटकों के उद्भव एवं विकास के साथ इसके स्वरूप से परिचय करवाना है।

Course Learning Outcome:

1. नाटक एवं एकांकी कला के तत्वों को जानेंगे।
2. नाटक व एकांकी के कथ्य, शिल्प और रंगमंच के संबंध से अवगत होंगे।
3. आधुनिक युगीन नाटकों के स्वरूप को पहचान पायेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| I | हिन्दी नाटकों एवं एकांकी का उद्भव व विकास | 12 |
| II | सत्य हरिश्चंद : भारतेन्दु हरिश्चंद चंद्रगुप्त : जयशंकर प्रसादआधे-अधूरे : मोहन राकेश | 12 |
| III | चारूमित्रा : डॉ. रामकुमार वर्मा, अंडे के छिलके : मोहन राकेश  | 12 |
| IV | नीली झील : धर्मवीर भारती, सड़क: विष्णु प्रभाकर, बंदी : जगदीशचंद्र माथुर | 12 |

संदर्भ- ग्रंथ :-

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*, दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* प्रेम सिंह, सुषमा आर्य, *रंग प्रक्रिया के विविध आयाम*, नई दिल्ली, राधा कृष्ण प्रकाशन ।
* नील मराठी, *साठोत्तरी हिन्दी नाटक*, दिल्ली, संजय प्रकाशन ।
* गोविंद चातक, *रंगमंचः कला और दृष्टि*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
* केदार सिंह, *हिन्दी नाटकःकल और आज*,दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग हाउस ।
* नेमीचंद जैन, *दृश्य-अदृश्य,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन ।
* देवेन्द्र कुमार गुप्ता,*हिन्दी नाट्य शिल्पःबदल तीरंग दृष्टि*, दिल्ली, पियूश प्रकाशन ।
* नेमीचंद जैन, *रंगदर्शन*, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन ।
* बी.बाला चंद्रन, *साठोत्तरी हिन्दी नाटकः परंपरा और प्रयोग*, कानपुर, अन्नपूर्णा प्रकाशन ।
* दयमंती श्रीवास्तव, *हिन्दी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियां*, इलाहाबाद, राका प्रकाशन ।
* गोविंद चातक, *आधुनिक हिन्दी नाटकः भाषिक और संवादिक संरचना*, नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
* Hemendra Nath Das Gupta, *The Indian Theatre*, Delhi, Gyan Publication .
* Ralph Yarrow, *Indian Theatre: Theatre of Origin, Theatre of Freedom,*

Richmond (Surrey), Curzon Press .

**HINSPL1**

**CREDIT:5(4+1+0) TOTAL CLASS:48**

**प्रश्न-पत्र का नाम: मध्यकालीन हिन्दी कविता**

**Course Objective :**

इस पाठ्यक्रम के जरिए पाठकों को हिन्दी साहित्य के मध्यकालीन साहित्य एवं साहित्यकारों के बारे में विश्लेषणात्मक ज्ञान मिल सकेगा। हिंदी साहित्य के मध्यकालीन काव्य के भाव तथा कला पक्ष से वे परिचित हो सकेंगे। और अतंतः वे इसधारा के विविध कवियों की काव्यगत विशेषताओं से समझते हुए इस कालखंड की प्रासंगीकता को भी समझ सकेंगे।

**Course Learning Outcomes:**

* हिन्दी साहित्य की मध्यकालीन युग से परिचित होना।
* भक्तिकालीन प्रमुख कवि तथा उनकी रचनाओं से परिचित हो सकेंगे।
* इन कवियों की काव्यगत विशेषताओं को समझकर उनकी रचना शैली तथा उद्देश्य को समझ सकेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | **कबीर: पद (92, 109, 118, 130, 134, 137, 141, 162, 163, 176, 177, 179, 181, 187, 190), जायसी: पद्मावत (नागमति वियोग खंड)** | 12 |
| II | **गोस्वामी तुलसीदास: विनय पत्रिका (पद - 79, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 100, 105, 111, 162, 172, 174, 178, 245)** | 12 |
| III | **सूरदास: भ्रमरगीत-सार (पद-42, 52, 62, 64, 85, 97, 130, 136, 178, 181, 210, 278,** **289, 296, 346)**  | 12 |
| IV | **वृहत पदावली (सं. नरोत्तम दास) पद संख्या–1 से 15 ।****शंकरदेव: बरगीत1 से 5 ।****माधवदेव: बरगीत1 से 5 ।**  | 12 |

**आधार-ग्रंथ :**

* *कबीर* – (सं) हजारी प्रसाद द्विवेदी।
* *पद्मावत* (मलिक मुहम्मद जायसी) – (सं) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल । विनय पत्रिका – गोस्वामी तुलसीदास।
* *भ्रमरगीत-सार* – (सं) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
* *असमीया साहित्य निकष* – बी. एन. रायचौधुरी,गौहाटी विश्वविद्यालय प्रकाशन ।

**संदर्भ-ग्रंथ :**

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* दिल्ली, प्रकाशन संस्थान ।
* विजेन्द्र स्नातक, *कबीर*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* हजारी प्रसाद द्विवेदी, *कबीर*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* माता प्रसाद गुप्त,*कबीर ग्रंथावली*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा ।
* राज किशोर(संपा), *कबीर की खोज*, दिल्ली,वाणी प्रकाशन ।
* डॉ.शुकदेव सिंह, *संत कबीर और भक्तिपंथ*, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
* रामचंद्र शुक्ल, *जायसी ग्रंथावली*, वाराणसी, नागरी प्रचारणी सभा।
* रामचंद्र शुक्ल, *सूरसागर*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा ।
* वासुदेव शरण अग्रवाल, *पद्मावत*, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा ।
* रामविलास शर्मा, *परंपरा का मूल्यांकन*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* रामविलास शर्मा, *तुलसी दास और भारतीय सौंदर्यबोध,* दिल्ली, साहित्य अकादमी ।
* तुलसीदास, *रामचरित मानस सटीक*, गोरखपुर,गीताप्रेस ।
* विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, *मीरा का काव्य*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
* रामचंद्र शुक्ल, *सूरदास- भ्रमरगीत सार*, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।

**Paper Code:** HIN 905(OPE 1)

**Credit:** 04 (Lecture-3, Tutorial-1, Practical-0)

**Total Classes: 48**

**प्रश्न पत्र का नाम: छायावाद (कवि और कविता)**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों कोआधुनिक युग के अंतर्गत प्रमुख काव्यधारा छायावाद से परिचित करवाना है। आधुनिकयुगीन पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से अलग छायावादी काव्यधारा और छायावादी कवियों से छात्रों को अवगत करवाना है। साहित्यिक नवोन्मेष का यह युग कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है अतः छात्रों को इस युग की पृष्ठभूमि सहित मूल प्रवृत्तियों को समझाना है।

**Course Learning Outcome:**

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत, छात्र

* आधुनिकयुगीन काव्यधारा छायावाद और इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित होंगे
* छायावाद के प्रमुख स्तंभ स्वरूप जयशंकर प्रसाद के कृतित्व से अवगत होंगे
* छायावाद के अन्यतम स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य से परिचित होंगे
* प्रकृति कवि सुमित्रानंदन पंत और उनकी कविताओं को समझ पायेंगे
* रहस्यवादी कवियत्री महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय प्राप्त करेंगे

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | No. of Classes |
| I | छायावादः सामाजिक- सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, साहित्यिक नवोन्मेष, प्रमुख स्तंभ | 12 |
| II | जयशंकर प्रसादः ‘इस करूणा कलित हृदय में...बेसुध चैतन्य हमारा’(आँसू) ‘ले चल वहाँ भूलावा देकर’, ‘ओ री मानस की गहराई’ (लहर)‘विषाद’, ‘हृदय का सौंदर्य’ (झरना), सुमित्रानंदन पंतः ‘प्रथमरश्मि’, ‘अनुभूति’, ‘ग्रामदेवता’, ‘नारी’। | 12 |
| III | सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाः ‘स्वप्न स्मृति’, ‘ध्वनि’ (परिमल)‘वसन्त आया’, ‘जागो फिर एक बार’ (अपरा)‘तोड़ती पत्थर’ (अपराजिता), | 12 |
| IV | महादेवी वर्माः ‘अलि! मैं कण कण को जान चली’, ‘मैं प्रिय को पहचानती नहीं’, ‘तुम मुझमें प्रिय, फिर परिचय क्या!’, ‘जीवन विरह का जलजात’, ‘नीर भरी दुख की बदली’ | 12 |

**संदर्भ ग्रंथः**

* रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी-साहित्य का इतिहास*- प्रकाशन संस्थान,दिल्ली।
* विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *समकालीन हिन्दी कविता*- लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद।
* रामस्वरूप चतुर्वेदी, *आधुनिक कविता यात्रा*- लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
* विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *आधुनिक हिन्दी कविता*- राजकमल प्रकाशन,दिल्ली।
* डॉ.हरदयाल, *हिन्दी कविता का समकालीन परिदृश्य*- अलेश प्रकाशन।
* राजेश जोशी, *समकालीन कविता और समकालीनता* ।
* शोभा नाथ यादव, *कवियत्री महादेवी* ।
* सत्य प्रकाश दीक्षित, *महाप्राण निराला*- ।
* बच्चन सिंह*, क्रांतिकारी कवि निराला*- ।
* रवि श्रीवास्तव, *परंपरा इतिहास बोध और साहित्य-* पोयिन्टियर प्रकाशन।

**SEMESTER – IV**

**HIN1001C**

**Credit : 4 (3+1+0)**

**Total Classes : 48**

**प्रश्न पत्र के नाम : हिन्दी उपन्यास की परंपरा**

**Course Objective:**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों कों हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास की जानकारी मिलेगी ।

उपन्यास की कथ्य शिल्प और उपन्यासों के तत्वका विस्तृत अध्ययन पाठ्यचर्चाकिया जाएगा।प्रमुख साहित्यकार और उनके उपन्यासों की चर्चा कथा साहित्य विश्लेषण पद्धति से सीख पाएगा। उपन्यासों के माध्यम से तथाकथित समाज व्यावस्था का जानकारी मिल सकेगा।

**Course Learning Outcomes:**

* हिन्दी उपन्यास के उद्धव और विकास का ज्ञान
* उपन्यास के विश्लेषण की पद्धति को जानेगी।
* प्रमुख लेखकों के उपन्यास का परिचय मिलेगा।
* तत्कालीन समाज व्यावस्था का ज्ञान।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| 1 | उपन्यास: अर्थ, परिभाषा,स्वरूप व उपन्यास के तत्व | 12 |
| 2 | हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा | 12 |
| 3 | परीक्षागुरू(लाला श्री निवासदास), गोदान(प्रेमचंद) | 12 |
| 4 | बाणभट्ट की आत्मकथा(हजारी प्रसाद द्विवेदी), मैला आंचल (फणीश्वरनाथ रेणु), तमस(भीष्म साहनी)  | 12 |

**संदर्भ- ग्रंथ**

* रामचंद्र शुक्ल*,हिन्दी साहित्य का इतिहास*, प्रकाशन संस्थान,दिल्ली
* प्रेमचंद,*गोदान*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* फणीश्वर नाथ रेणु,*मैला आंचल*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* भीष्म साहनी,*तमस*,राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
* गोलाब राय,*हिन्दी उपन्यास का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली
* मधुरेश,*हिन्दी उपन्यास का विकास*, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद

**HINSPL2**

**CREDIT: 4 (3+1)**

**TOTAL CLASS: 48**

**प्रश्न पत्र का नाम : तुलनात्मक साहित्य**

**Course objective:-**

तुलनात्मक साहित्य के परिचय, परिभाषा,महत्वों को समझ पायेंगे।

आधुनिक असमिया कविता कहानी एवं निबंधों के सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे।

**Course learning outcomes:-**

* तुलनात्मक साहित्य के द्वारा हिंदी व असमिया भाषा से भलिभॉति परिचित हो सकेंगे।
* तुलनात्मक साहित्य के माध्यम से अनुवाद की विशेषताओं और महत्व को भलिभॉति समझ सकेंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **Unit** | **Content** | **No of classes** |
| **I** | **तुलनात्मक साहित्य:****अवधारणा, स्वरूप, क्षेत्र तथा अध्ययन की समस्याएँ.****तुलनात्मक साहित्य उद्भव व विकास: पाश्चात्य एवं भारतीय चिंतन परंपरा,तुलनात्मक साहित्य और विश्वसाहित्यकी आलोचना ।** |  **12** |
| **II** | **आधुनिक असमीया कविता : सामान्य परिचय विशेषताएँ ।****पाठ्य कविताएं –****इयात नदी आछिल – नवकान्त बरुआ****कोयला –अमूल्य बरुआ****सोनजिरा माहिर नाड़ी - केशव महंत** |  **12** |
| **III** | **आधुनिक असमीया कहानी: सामान्य परिचयविशेषताएँ ।****पाठ्य कहानियाँ–****-मुक्ति लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ** **रस- मोहिम बोरा,**  **निरूपमा बरगोहॉई - ढेँकीर सरग** |  **12** |
| **IV** | **आधुनिक असमीया निबंध साहित्य : सामान्य परिचय विशेषताएँ****पाठ्य निबंध*** **सौंदर्यर प्रतारणा – वाणीकांत काकति**
* **भारतर वैचित्र्यर माजत एक्य – डॉ. हेमन्त कुमार शर्मा**
* **लोकसंस्कृति – डॉ. नवीन चंद्र शर्मा**
 |  **12** |

**संदर्भ ग्रंथ :**

* बी.एन.रायचौधुरी:*असमीया साहित्य निकष*,गौहाती विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
* चित्र महंत : *असमीया साहित्य का इतिहास* ।
* सत्येन्द्रनाथ शर्मा: *असमीयासाहित्यर इतिवृत्त* ।
* हेमंत कुमार शर्मा: *असमीयासाहित्यत दृष्टिपात* ।
* डॉ. वाणिकांतकाकोती: *साहित्य आरू प्रेम* ।
* भारतीय परिप्रेक्ष्य,इंद्रनाथ चौधरी: *तुलनात्मक साहित्य* ।
* नगेंद्: *तुलनात्मक साहित्य नेशनल*,पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
* नगेंद्र,: भारतीय साहित्य प्रभात प्रकाशन,दिल्ली
* इंद्रनाथचौधुरी,: *तुलनात्मक साहित्य की भूमिका*,नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ल

**HINOPEN2**

**CREDIT:5 (4+1+0) TOTAL CLASS: 48**

प्रश्न-पत्र का नाम : विमर्श साहित्य (दलित/आदिवासी/स्त्री)

Course objective:

इस पाठ्यक्रम में स्त्री विमर्श,दलित विमर्श और आदिवासी विमर्श से जुड़े हुए मुद्दों का अध्ययन प्रस्तावित है। आधुनिक समय में स्त्री, दलित और आदिवासी मुक्ति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता गया है। स्त्री-शोषण और दलित-शोषण के विभिन्न रूपों का अध्ययन स्त्री-मुक्ति और दलित मुक्ति की दिशा में पहला कदम है। इसके साथ हिन्दी में स्त्री लेखिकाओं के वैयक्तिक योगदान, दलित और आदिवासी लेखकों के योगदान और उनके सहित्यिक संघर्ष का अध्ययन भी इस पाठ्यक्रम में शामिल है।

Course learning outcomes:

1. इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र स्त्री, दलित और आदिवासी अध्ययन से जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों से परिचित हो पाएंगे।
2. मुख्यधारा के साहित्य से स्त्री, दलित और आदिवासी साहित्य में अंतर को चिंह्नित करने में सक्षम होंगे।
3. स्त्री, दलित और आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन के आधारों से परिचित हो पाएंगे।

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| Unit | Contents | Nos of Classes |
| I | दलित साहित्यः अर्थ अवधारणा और इतिहास, दलित मुक्ति, प्रमुख हिन्दी दलित लेखक और उनके साहित्य सलाम : ओमप्रकाश वाल्मीकिआवाजे : मोहनदास नैमिशराय  | 12 |
| II |  साहित्य में नारीवाद : अर्थ, अवधारणा, इतिहास, प्रमुख हिन्दी स्त्री लेखिकाएँ और उनके साहित्य में नारीवाद: महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नु भण्डारी, मृदूला गर्ग, चित्रा मुदगलप्रेतयोनि (चित्रा मुद्गल)दुनिया का कायदा (मृदुला गर्ग)  | 12 |
| III |  आदिवासी साहित्य : अर्थ, अवधारणा, इतिहास, प्रमुख हिन्दी आदिवासी लेखक और उनके साहित्य   | 12 |
| IV |  वनकन्या : एलिस एकाभंवर : रोज केरकेट्टा  | 12 |

संदर्भ-ग्रंथ :

* देवेन्द्र चौबे, *आधुनिक साहित्य में दलित विमर्श*
* शरण कुमार लिंबाले, *दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र*, दिल्ली, वाणी प्रकाशन
* दीपक कुमार पाण्डेय, *दलित विमर्श और हिन्दी साहित्य*, लोकभारती प्रकाशन
* अरबिन्द जैन, *औरत अस्तित्व श्री अस्मिता*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
* प्रगति सक्सेना, *स्त्री की पराधीनता अनुवाद*, राजकमल प्रकाशन
* डॉ. के. एम. मालती*, स्त्री विमर्श,* वाणी प्रकाशन
* रमणिका गुप्ता, *आदिवासी साहित्य यात्रा*, राधाकृष्ण
* रमणिका गुप्ता, *आदिवासी विकास के विस्थापन*, राधाकृष्ण
* राजवाला सिंह, मधुवाला सिंह, *भारत में महिलाएँ आविष्कार पम्लिशर्स*, डिस्ट्रीब्यूटर्स,

जयपुर

* अरविन्द जैन, *औरत अस्तित्व और अस्मिता*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* ममता जेटली और श्रीप्रकाश शर्मा, *आधी आवादी का संघर्ष*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* राजेन्द्र यादव, *आदमी की निगाह में औरत*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
* एम. मालती, *स्त्री विमर्श भारतीय परिपेक्ष,* वाणी प्रकाशन दिल्ली

**HINDPW CREDITS:6**

**Dissertation/Project Work (DPW)**

Student would write a dissertation/project in the fourth semester with the help of assigned teacher. The topic of dissertation/project would be decided by DRC. 6 Credits are assigned for this course.

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*